भाकृअनुप - केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि-सलाहकार सेवा

अक्टूबर 2025 के द्वितीय पखवाड़े की रणनीतियां

- यदि भूरा पौध माहू (बीपीएच) की संख्या लागत-लाभ सीमा स्तर (ईटीएल) अर्थात 5-10 कीट/पूंजा से अधिक है, तो धान के खेत को वैकल्पिक रूप से गीला और सुखाने की तकनीक (लंबे समय तक खेत में पानी खड़ा नहीं होना चाहिए) अपनाने की सलाह दी जाती है। यदि फिर भी समस्या बनी रहती है, तो ट्राइफ्लुमेजोपाइरिम 10% एससी 94 मिली/एकड़ दर पर या पाइमेट्रोजिन 50% डब्ल्यूजी 120 ग्राम/एकड दर पर या डाइनोटफ्यूरन 20% एसजी 80 ग्राम/एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल 50 मिली/एकड़ या फ्लोनिकैमिड 50% डब्ल्यूजी 60 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें। भूरा पौध माहू के लिए अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग निर्धारित मात्रा में ही करें। भूरा पौध माहू के संक्रमण के दौरान नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग से बचें।

- यदि इल्लियों का प्रकोप देखा जाता हैः क्विनॉलफॉस 25 ईसी 400 मिली/एकड़ या क्लोरोपाइरीफॉस 20ईसी 500 मिली/एकड दर पऱ प्रयोग करें और इसे सुबह के समय पौध के मूल पर छिड़काव करें।
- एक-दो दौजियों में आच्छद अंगमारी रोग दिखाई देने पर, 75% प्रोपिकोनाजोल 200 मिली/एकड़ दर पर या हेक्साकोनाजोल 50% 400 मिली/एकड़ या वैलिडैमाइसिन 3एल 400 मिली/एकड़ या टेबुकोनाजोल 50% ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 80 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें। छिड़काव को 7-10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।
- जीवाणुज अंगमारी/जीवाणुज पत्ता अंगमारी होने की स्थिति में, स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट (9%), टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड (1%) 200 ग्राम/एकड़ के साथ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 ग्राम/एकड़ दर पर प्रयोग करें। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।

- पत्ता प्रध्वंस होने की स्थिति में बीमारी को नियंत्रित करने के लिए टेबुकोनाजोल 50% ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% (नैटिवो 75 डब्ल्यूजी) 80 ग्राम/एकड़ या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ पानी में मिलाकर छिड़काव करें। वैकल्पिक रूप से, बेल की 25 ग्राम ताजी पत्तियां या तुलसी की 25 ग्राम ताजी पत्तियां या नीम की 200 ग्राम ताजी पत्ते के निचोड़ का प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें जिससे रोग की घटनाओं को कम करने में मदद हो सकती है। साथ ही, ट्राइकोडर्मा विरिडे (न्यूनतम 10^6 सीएफयू) 2 किग्रा/एकड़ जैसे जैव नियंत्रक कारक का उपयोग किया जा सकता है। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।
- आभासी कंड के मामले में कॉपर हाइड्रॉक्साइड 77% (कोसाइड 202) 400 ग्राम/एकड़ या टेबुकोनाजोल 25% (फोलिकूर) 400 ग्राम/एकड़ दर पर बाली निकलने की अवस्था में छिड़काव करें। आभासी कंड के प्रभावी नियंत्रण के लिए छिड़काव को सात दिनों के अंतराल पर दोहराएं।
- दक्षिण पश्चिम मानसून पहले ही ओडिशा से वापस जा चुका है। चूँकि अधिकांश क्षेत्रों में फसल प्रजनन अवस्था में है, पूरक सिंचाई प्रदान करने का प्रयास करें। यदि संभव हो, तो अजैविक तनाव के प्रति पौधों की प्रतिरोधक क्षमता में सुधार हेतु पत्तियों पर पोटेशियम नाइट्रेट का 1% अर्थात 200 लीटर पानी में 1 किलो पोटेशियम नाइट्रेट या पानी में घुलनशील उर्वरक जैसे 13:0:45 की दर से 5 ग्राम/लीटर पानी या 19:19:19 की दर से 5 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ।
- शीघ्र पकने वाले किस्मों में जब 80-85% तक फसल पक जाए तो फसल की कटाई हंसुआ या कंबाइन हार्वेस्टर या रीपर का उपयोग करके करें। खपत के उद्देश्य से धान के दानों को 14% नमी मात्रा सहित धूप में सुखाया जाना चाहिए और बीज के उद्देश्य के लिए इसे 12% तक सुखाया जाना चाहिए। उपज की बेहतर कीमत के लिए प्रत्येक किस्म को बिना मिलाए अलग-अलग पैक करें।
- धान/चावल के सुरक्षित भंडारण के लिए, सुपर ग्रेन बैग का उपयोग करें, जो लंबे समय तक धान की गुणवत्ता, बनावट, रंग, सुगंध और स्वाद को बनाए रखने में सहायक है या बेमौसम वर्षा के नुकसान से बचने के लिए

कटे हुए धान को उचित रूप से बैग में रखें और ढेर को उपयुक्त रूप से ढक कर रखें।

- यदि पकी हुई धान की फसल बारिश से भीग गई हो, तो बीज को अंकुरित होने से बचाने के लिए 5% नमक के घोल का छिड़काव करें। काटे गए धान के मामले में, अंकुरण से बचने के लिए 100 किलोग्राम उपज में 5 किलोग्राम नमक मिलाएं।
- उपयुक्त क्षेत्रों में मिट्टी में बची हुई नमी का उपयोग करने के लिए कटाई से एक सप्ताह पहले खड़ी पकी फसल में मसूर/उड़द/मूंग जैसी दालों का छिटकाव किया जा सकता है।
- गंधी बग: गंधी बग के प्रबंधन के लिए क्लोरपायरीफॉस 20% ईसी 400 मिली/एकड़ की दर से या मैलाथियान 50% ईसी 400 मिली/एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। क्लोरपायरीफॉस 1.5% डी 10 किग्रा/एकड़ की दर से या मैलाथियान 5% डी.पी. 10 किग्रा/एकड़ की दर से या इमिडाक्लोप्रिड 06% + लैम्ब्डा-साइहैलोथ्रिन 04% एसएल 120 मिली/एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर पत्तियों पर छिड़काव समान रूप से सुबह के समय, जब हवा न हो या न्यूनतम हो, किया जाना चाहिए।